Visit Dwarkadheeshvastu.com For
FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers
****
All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name
****
We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**
Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Mangla-Sandhya-Aarti Hindi

ॐ

श्री मातृ-मन्दिर

आरती

"नीराजनं सुमंगल्यम् कपूरिण समन्वितम्।
चन्द्रार्कवन्हि सदृशं महादेवी नमोऽस्तुते।।"

जग जननी जय जय, माँ जग जननी जय जय।
भयहारिणि भवतारिणि भवभामिनि जय जय ।। १ ।।
ॐ जग जननी

तू ही सत-चित-सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर, पर-शिव सुर-भूपा ।। २ ।।
ॐ जग जननी

आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर, अज आनन्द राशी ।। ३ ।।
ॐ जग जननी

अविकारी अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्त्ता विधि भर्त्ता हरि, हर संहारकारी ।। ४ ।।
ॐ जग जननी

तू विधिवधू, रमा तू, उमा, महामाया।
मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।। ५ ।।
ॐ जग जननी

राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वांछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ।। ६ ।।
ॐ जग जननी

दशविद्या, नवदुर्गा नाना शस्त्र करा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा।। ७।।
ॐ जग जननी

तू परधाम निवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशान विहारिणि, ताण्डवलासिनि तू।। ८।।
ॐ जग जननी

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या, तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा।। ९।।
ॐ जग जननी

तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अतिगरलमना।
रत्न विभूषित तू ही, तू ही अस्थितना।। १०।।
ॐ जग जननी

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धि प्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वर दे।। ११।।
ॐ जग जननी

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
भेद प्रदर्शिनी वाणी, विमले वेदत्रयी।। १२।।
ॐ जग जननी

हम अतिदीन दुःखी माँ, विपद जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।। १३।।
ॐ जग जननी

निज स्वभाववश जननी, दया दृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि, चरण-शरण दीजै।। १४।।
ॐ जग जननी

शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्ति-रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म्।।

स्तुति

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पंद दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरून्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवै नमः।।

नमामि जगदाधारं गुरुं शंकर रूपिणम्।
रामदासं चर्सिद्धेशं जगत कल्मषहारिणम्।।

मोहान्धकार हन्तारं ज्ञानानन्द स्वरूपिणम्।
त्रातारं भवभीतिभ्यो गोरक्षं प्रणमाम्यहम्।।

श्री आद्यशंकर गुरुं वन्दे सच्चिदानन्दस्वरूपिणम्।
आर्तिच्छिद्दं परं देवं भक्तानाम भुक्तिमुक्तिदम।।

श्रीराममन्दिरमेवहि यस्य भवनं श्रीशक्तिपीठंपरम्।
प्राप्तर्नैव कृपाकटाक्षरुचिरं श्री कालीकान्तंस्वयम्।।

तेजोपुंजमयि स्वरूपरुचिरम्, श्री राजराजेश्वरी।
नित्योपासक शंकरस्वरूप गुरुवै तस्मै नमः साधवे।।

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रांभजे।।

श्री शंखचक्र मुसलाम्बुज युग्महस्ताम्,
नागेन्द्राहारवलयांकित कण्ठमालाम।
सिन्दूर कुंकुम सहस्त्रमरीचि दीप्ताम्,
श्री शारिकाम त्रिनयनां हृदयेऽस्मरामि।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहिविश्वं, त्वमीश्वरीदेवि चराचरस्य।।

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि च न सीदति धर्म वर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा,
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासिमाया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वंवैप्रसन्नाभुविमुक्तिहेतुः।।

विद्या समस्तास्तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम।।

दक्षिणा मुक्तकेशालीं दिगम्बर विनोदिनीम्।
महाकाल शवाविष्टां स्मरानन्दोपरिस्थिताम्।।

सद्यः छिन्ना शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभ्रति,
घोरास्यां शिरसां सृजां सुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम्।

सृक्क्यसृक् प्रवहां श्मशान निलयांश्रुत्योशवालंकृतिम्।
श्यामांगी कृत मेखलां शवकरैर्देविभजे कालिकाम्।।

ॐ कालीकाल हरां देवीं कंकालवीज रूपिणिम्।
कालरूगां कलीतातां कालिका प्रणमाम्यहम्।।

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सुर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु:।।

देव्यपराधक्षपामन स्तोत्रम्

न मत्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्ततिमहो:,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथा।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया,
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्माच्युतिरभूत।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननी सकलोद्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहव: सन्ति सरला:,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुत:।
मदीयोऽयं त्याग: समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तवमया।
तथापि त्वं स्नेहंमयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे,
कुपुत्रोजायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया,
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता,
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपर्मागरा,
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटि कनकैः।।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जपनीयं जप विधौ।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भवति जगदीशैकपदवीं,
भवानी त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटी फलमिदम्।।

न मोक्षस्याकाँक्षा भवविभवाँछापिच न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानी रुद्राणी शिवशिव भवानीति जपतः।।

नाराधितासि विधिना विविधौपचारैः,
किं रक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गेकरूणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं ममभावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननींस्मरन्ति।।
जगदम्ब विचित्रमत्र कि परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।

प्रार्थना

माता भवानी च पिता भवानी, बन्धुर्भवानी च सखा भवानी।
विद्या भवानी द्रविणं भवानी यतो यतो यामि ततो भवानि।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे: साध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ तत्पुरुषायविद्महे, महादेवायधीमहि,
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि,
तन्नो देवी प्रचोदयात्।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुवः।
यद्भद्रं तन्न आसुव।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाकभवेत।।

ॐ असतो मा सदगमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतंगमय।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

ॐ शान्ति शांतिः शांतिः सुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।

जयकार

धर्म की जय हो। अधर्म का नाश हो।
प्राणियों में सद्‌भावना हो। विश्व का कल्याण हो।
भारतमाता की जय। जगदम्बा माता की जय।
शारिका भवानी की जय। महिषासुरमर्दिनी की जय।
दुर्गा माता की जय। काली माता की जय।
लक्ष्मी माता की जय। सरस्वती माता की जय।
पार्वती माता की जय। जगदम्बा माता की जय।
सच्चियाँ ज्योती वाली माता तेरी सदा ही जय हो।

(दंडवत प्रणाम)

श्री राम मन्दिर

आरती

''कदली गर्भ सम्भूत कर्पूरं च प्रदीपितम्।।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

भगवान श्री जानकीनाथ

जय जानकिनाथा, (प्रभु) जय श्री रघुनाथा ।
दोउ कर जोरें विनवौं, प्रभु ! सुनिये बाता ।। टेक ।। ॐ जय …

तुम रघुनाथ हमारे, प्रान पिता-माता ।
तुम ही सज्जन-संगी, भक्ति-मुक्ति-दाता ।। ॐ जय …

लखचौरासी काटो; मेटो यम-त्रासा ।
निसिदिन प्रभु मोहि राखिये;, अपने ही पासा ।। ॐ जय …

राम भरत लछिमन; संग शत्रुहन भैया ।
जगमग ज्योति विराजै; सोभा अति लहिया ।। ॐ जय …

हनुमत नाद बजावत; नेवर झमकाता ।
स्वर्णथाल कर आरती; कौसल्यामाता ।। ॐ जय …

सुभगमुकुट सिर धनु सर; कर सोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि, पल-पल बलिहारी ।। ॐ जय …

श्री जानकी जी

आरती कीजै जनक-लली की। राममधुपमन कमल कली की। टेक
रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरी। अंतर सांवर बाहर गोरी।।
सकल सुमंगल सुफल फली की। आरती कीजै ...
पिय दृगमृग जुग बन्धन डोरी। पीय प्रेम रस-राशि किशोरी।।
पियमन गति विश्राम थली की। आरती कीजै ...
रूप-रास गुणनिधि जगस्वामिनि। प्रेम प्रवीन राम अभिरामिनि।।
सरबस धन हरिचंद अली की। आरती कीजै ...

शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्ति-रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्ति शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि ।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म्।।

श्री राम स्तुति प्रातः काले

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हर्षित महतारी मुनिमनहारी अद्‌भुत रूप निहारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुजचारी
भूषन, बनमाला नयन विसाला सोभा सिंधु खरारी ।। १ ।।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
मायागुन ज्ञानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ।।

करुनासुखसागर सबगुन आगर जेहिगावहिं श्रुतिसंता ।
सो मम हितलागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।। २ ।।

ब्रह्माण्ड निकाया निर्मितमाया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।

उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।। ३ ।।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।।

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना, होय बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहि हरि पद पावहि, ते न परहि भवकूपा ।। ४ ।।

विप्रधेनु सुर सन्त हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गोपार ।। ५ ।।

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुबीर ।। ६ ।।

प्रनतपाल रघुनायक, करुनासिंधु खरारि ।
गए सरन प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि ।। ७ ।।

नहिं बुद्धि नहिं बाहुबल, नहिं खरचन को दाम ।
मोसे अपंग पतित की, तुम पत राखो राम ।। ८ ।।

बार बार वर माँगऊ, हरषि देहु श्री रंग ।
पद सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग ।। ९ ।।

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु विषम भवभीर।। १० ।।

श्री राम स्तुति सांयकाले

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भवभय दारुणम्।
नव कंज लोचन कंज-मुख कर कंज पद-कंजारुणम्।

कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील-नीरद-सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम्।।

भजु दीन बन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश निकंदनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल-चन्द दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खरदूषणम्।।

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनिमन-रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनम्।।

मनु जाहि राचेउ मिलहि सो वरु सहज सुन्दर सांवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।

एहिभांति गौरि अशीस सुनि सिय सहित हियँ हरषित अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

जानि गौरि अनुकूल सियहिय हरष न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल; बाम अंग फरकन लगे ।।

(प्रात:कालीन स्तुति के दोहे ''श्रवन सुजसु ··· से मो सम दीन न दीन हित'' ··· तक)।

प्रार्थना

नीलाम्बुजश्यामल कोमलांगं, सीतासमारोपित वाम भागम्।
पाणौ महासायक चारु चापं, नमामि रामं रघुवंश नाथम्।।

लोकाभिरामं रणरंग धीरं, राजीव नेत्रं रघुवंश नाथम्।
कारुण्य रुपं करुणा करंतं, श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।

श्री रामचन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि,
श्री रामचन्द्र चरणौ वचसागृणामि।

श्रीरामचन्द्र चरणौ शिरसा नमामि,
श्रीरामचन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये ।।

अपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्यवामेतु जनकात्मजा,
पुरतोमारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनं।

अतुलितवलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं,
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकांत कमलनयनं, योगभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णु भवभय हरं सर्वलोकैकनाथम्।

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं,
वैदेहिहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं,
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेत द्धि रामायणम्।।
कपूर्र गौर करुणावतारं
संसार सारं भुजगेन्द्रहारम्
सदा बसन्तं हृदयार्रविन्दे
भवं भवानी सहितं नमामि।
अच्वुतं केशवं रामनारायणम्,
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।

श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं,
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे।।
(राधिकानायकं कृष्णचन्द्रं भजे)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।

श्रीराम महामन्त्र

रामरामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने ।।
ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णु: प्रचोदयात्।
ॐ दाशरथाय विद्महे, सीतावल्लभाय धीमहि।
तन्नो राम: प्रचोदयात्।।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्टा
शान्तिर्भवतु।।

जयकार

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां श्री रामरामेति गर्जनम्।।
श्री सीताराम नाम महाराज की जय।
भगवान श्री राजा रामचन्द्र महाराज की जय।
जगद्जननी श्री सीता माता की जय।
रामसखा श्री लक्ष्मणयती की जय।
संकटमोचन पवनसुत हनुमान की जय।
आनन्द कन्द भगवान श्रीकृष्ण चन्द की जय।
उमापति महादेव की जय ।
जानकी पतये नम: जय जय सीताराम।।

पुष्पाञ्जलि

(पूजा के अतिरिक्त)

ॐ महिषघ्नि महामायै, चामुण्डे मुण्डमालिनि।
द्रव्यमारोग्यविजयं देहि देवि नमोऽस्तुते ।। १ ।।

दुर्गोत्तारिणी दुर्गे त्वं सर्वाऽसुरनिषूदिनि।
धर्मार्थ मोक्षदे देवि नित्य मे वरदो भव ।। २ ।।

कालि कालि महाकालि कालिके पापहारिणि।
धर्म काम प्रदे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ।। ३ ।।

हर पापं हरक्लेशं हरशोकं हराऽशुभम्।
हर रोगं हरक्षोभं हरऽपमानं हराप्रियम ।। ४ ।।

ॐ आयुर्देहि यशोदेहि भाग्य भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनन्देहि सर्वान्कामान्प्रदेहि में ।। ५ ।।

सर्व मड़गूलमाड़गूल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।। ६ ।।

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ।। ७ ।।

नानासुगन्धयुक्तं च यथाकालोद्भवं तथा।
मया पुष्पाञ्जलिर्दत्ता गृहाणं परमेश्वरि । ८ ।।

इन मन्त्रों के साथ श्री मां के चरणों में पुष्प चढ़ावें।
नमस्कार करें।

● श्री हनुमते नमः ●

श्री हनुमान चालीसा

—:O:—

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुवर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान-गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।
रामदूत अतुलित बलधामा, अन्जनि पुत्र पवनसुत नामा।
महाबीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी।
कंचन बरन बिराज सुबेसा, कानन कुण्डल कुंचित केसा।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै, काँधे मूँज जनेऊ साजै।
शंकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग बन्दन।
विद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लषन सीता मन बसिया।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, विकट रूप धरि लँक जरावा।
भीम रूप धरि असुर सँहारे, रामचन्द्र के काज संवारे।
लाय सजीवन लखन जियाये, श्री रघुवीर हरषि उर लाये।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राजपैद दीन्हा।
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना, लंकेश्वर भए सब जग माना।

जुग सहस्र जोजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधिलाँघि गये अचरज नाहीं ।
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डर ना ।
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हाँक तें काँपै ।
भूत पिसाच निकट नहीं आवैं, महाबीर जब नाम सुनावै ।
नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।
संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।
सब पर राम तपस्वी राजा, तिन के काज सकल तुम साजा ।
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ।
चारों युग परताप तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत् उजियारा ।
साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकन्दन राम दुलारे ।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता ।
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ।
तुम्हरे भजन राम को पावै, जनम जनम के दुख बिसरावै ।
अन्त काल रघुबर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।
और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई ।
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।
जै जै जै हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बंदि महा सुख होई ।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा, होय सिद्धि, साखी गौरीसा ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।

।। इति ।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रवि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ।
देवन आनि करी विनती तब छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।को.।
बाली की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पन्थ निहारो ।
चौंकि महामुनि साप दियो तब चाहिये कौन बिचार बिचारो ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ।को.।
अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत न बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया सुधि प्रान उबारो ।को.।
रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय अशोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।को.।
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो ।को.।
रावन युद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबैं दल मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु बँधन काटि सुत्रास निवारो ।को.।
बँधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पाताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बली देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ।को.।
काज किये बड़ देवन के तुम वीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो सँकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।को.।

दो० – लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ।।

।। इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ।।